शोध सारांश

'दिल्ली शहर दर शहर' (संस्मरण) और 'ज़माने में हम' (आत्मकथा) पुस्तकों की लेखिका हिंदी की जानी-मानी आलोचक प्रो. निर्मला जैन हैं। इन दोनों पुस्तकों में निर्मला जैन ने 20वीं शताब्दी के दिल्ली शहर में हुए परिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, शैक्षिक आदि परिवर्तनों को रेखांकित किया है। चूँकि 'ज़माने में हम' एक आत्म कथा है इसलिए इसका विस्तार दिल्ली शहर के बाहर (विदेशों तक) भी चला गया है। दिल्ली शहर अपनी सामाजिक-संरचना, राजनीति, अर्थव्यवस्था, सभ्यता, संस्कृति, साहित्य तथा कलाओं आदि कई स्तरों पर हमें भारत के लगभग सभी शहरों से काफ़ी अलग नज़र आता है। यह दिल्ली शहर की अपनी एक विशिष्टता है।

'दिल्ली शहर दर शहर' और 'ज़माने में हम' पुस्तकें बीसवीं शताब्दी के दिल्ली शहर का एक मुकम्मल इतिहास तो प्रस्तुत करती ही हैं, इसके अलावा यह उन दिशाओं की तरफ भी इशारा करती हैं जिस दिशा में यह शहर जा रहा है। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में दिल्ली शहर के समाज में जो परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं उनको भी रचनाकार ने बखूबी पकड़ा है। वर्तमान समय में दिल्ली शहर का भौगोलिक विस्तार, दिल्ली शहर में निरंतर बढ़ती जनसंख्या की समस्या, ट्रैफिक की समस्या, प्रदूषण के बढ़ते स्तर की समस्या, दिल्ली में निवास-स्थान की समस्या के कारण बहुमंजिला इमारतों का बड़ी संख्या में निर्माण होना, पशुओं के खान-पान और रख-रखाव की समस्या, दिल्ली शहर पर प्लास्टिक मनी (डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड) का प्रभाव, बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा कॉल सेंटर्स का प्रभाव, दिल्ली के खान-पान, पहनावे, बोली-बानी आदि में आए परिवर्तनों का प्रभाव आदि बिंदुओं के संदर्भ में इसे देखा जा सकता है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि मैंने इन पुस्तकों की विषयवस्तु को आधार बनाकर दिल्ली शहर के समाज, राजनीति, साहित्य, संस्कृति, ललित कलाओं आदि महत्वपूर्ण मुद्दों को दो अलग विधाओं (संस्मरण एवं आत्मकथा) के आलोक में देखने का प्रयास किया है।